संपादक के नोट

मैं आप सभी हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के बहुमूल्य नाम पर बधाई देती हूं। ''देखो, कितना अच्छा और मनोहर बात है भाइयों आपस में मिले रहें है।''

भीड़ के बावजूद १२० चेले ऊपरी कमरे में जमा थे , पवित्र आत्मा महान शक्ति के साथ उन पर उतरा , क्योंकि वे सब एकता और प्रार्थना में इंतजार कर रहे थे।

लेकिन दूसरे जो कुड़कुड़ा रहे थे , खुद के लिए चौड़ा रास्ता चुना है।

कइयों को यीशु और क्रूस नहीं चाहिए, लेकिन वे उसकी महिमा और राज्य की आशा करते है। मत्ती ७ : १४, ''परंतु चोट है वह वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन की ओर ले जाता है और थोड़े ही हैं जो उसे पाते हैं।''

प्रभु का एक सेवक प्यार के लिए क्रूस पर उसकी प्रार्थना और उपवास में था, प्रभु ने उसे शक्तिशाली इस्तेमाल किया और कई आत्माएं बच गए।

कई वर्षों के बाद उसके पास एक कार और एक बंगला था और कई

धन अपने जीवन में पाया। इसलिए कुछ समय के बाद उसके जीवन में

प्रभु का प्यार और प्रभु की उपस्थिति नहीं थी। उसके जीवन में शान्ति नहीं थी।

एक दिन प्रभु ने उस से कहा, ''क्रूस के पास वापस जाओ।''

लूत को इब्राहीम के साथ रहना पसंद नहीं आया। वह महान आशीर्वाद परमेश्वर ने इब्राहीम को दिया था उसे पसंद नहीं था, उसकी आँखें सदोम की उपजाऊ

भूमि पर थी। जब प्रभु सदोम को नष्ट करने का फैसला किया तब लूत को सदोम को छोड़ना पड़ा और दूर जाना पड़ा था। उनकी पत्नी नमक का एक खम्बा बन गई। उनके बच्चे अन्यजातियों जिसे प्रभु पसंद नहीं करते थे उनके साथ संबंध थे, वे एक पीढ़ी को उत्पादन किया है जो कि प्रभु की दृष्टि में मनभावन नहीं था।

किसी मनुष्य के दो बेटे थे और छोटे ने अपने पिता से कहा, ''मेरे पिता मुझे धन के हिस्से में से जो मेरे पास आता है दे दे।'' तो वह उन्हें अपनी आजीविका बांट दिया। क्यों वह अपने हिस्से के लिए पूछा ? व्यापार करने और कमाने के लिए ? नहीं, लेकिन वह चौड़ा रास्ता चुना है, क्योंकि वह जीवन का आनंद और उसके सभी विलासिता का आनंद चाहता था।

एलीशा पवित्रता के नबियों के बेटों के लिए बोल रहा था क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था और वह पवित्र आत्मा के वरदान था। नबियों के इन बेटों उच्च पदों तक पहुंच सकते थे अगर वे एलीशा की बात सुनते। लेकिन वे कुड़कुड़ाना शुरू कर दिया, क्योंकि वे अलग होना चाहते थे। २ राजा ६ : १–२, नबियों के चेलों ने एलीशा से कहा, ''देख यह स्थान जहाँ हम तेरे सम्मुख रहते हैं, हमारे लिए बहुत छोटा है। हमें यरदन तक जाने की अनुमति दे कि हम में से प्रत्येक एक एक बल्ली लाए और हम वहां अपना निवास–स्थान बनाएं जहाँ हम रह सकें।''उसने कहा, ''जाओ।''

यहाँ हम देखते हैं कैसे वे उनमें से हर एक के लिए एक घर चाहते थे।

हम एक ही बात विश्वासियों और सभाओं के बीच हो रहा है आज देखते हैं, वे अलग होना चाहते हैं और एकता में होने के लिए नहीं चाहते।

कुछ लोगों को जब वे एक छोटे से अभिषेक प्राप्त करते हैं, लगता है कि वे सब कुछ प्राप्त किया है और गर्व हो जाते हैं।

एलीशा को देखो , जो १४ साल के लंबे साल के लिए एलिय्याह के हाथ के नीचे विनम्र होना सीखा। उन्होंने एलिय्याह से बहुत कुछ सीखा है। अंत में हम देखते हैं कि जब से एलीशा एलिय्याह के साथ अंत तक बने रहे, वह दुगना भाग उपहार में पाया है जो कि एलिय्याह के पास था।

१ पतरस ५ : ६, ''इसलिए परमेश्वर के सामर्थी हाथ के नीचे दीन बनो, जिस से वह तुम्हें उचित समय पर उन्नत करे।''

इसलिए प्यारे भाइयों और बहनों, हमें प्रभु के आगे खुद को विनम्र करना हैं। बड़ों का आदर करना , माता–पिता की आज्ञा का पालन करना और सभी हमारे दिल, दिमाग और आत्मा के साथ प्रभु से प्यार करना है।

प्रभु आप सभी को आशीर्वाद और एकता में रखें जब तक कि हम फिर से मिले।

मसीह में आपकी बहन।

पास्टर सरोजा म.

आपके पास यीशु लिए कमरा है ? अपने दिल को खोलिए।

लूका „ % ‰ , ''उसने अपने पहलौठे पुत्र को जनम दिया, और उसे कपड़ों में लपेट कर चरनी में रख दिया, क्योंकि सराय में उनके लिए कोई जगह न थी।'' इस दुनिया में, हमारे जन्म स्थान हमारे जीवन का एक बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू है। जब हम किसी भी प्रकार का फारम भरने की जरूरत पड़ती है , हम सब हमारे जन्म स्थान को भरना आवश्यक होता हैं। उदाहरण के लिए । हम अलग–अलग राज्यों से सभी हैं , हम में से कुछ केरल में पैदा होते हैं, महाराष्ट्र, बेंगलुरू, आदि में कुछ लेकिन, हम में से प्रत्येक हमारे जन्म घर अत्यंत महत्व का है। कल्पना कीजिए, २००० साल पहले जब राजाओ का राजा और प्रभुओं का प्रभुओं अर्थात यीशु मसीह का जब जन्म हुआ था, कोई भी उसे एक जगह देने के लिए तैयार नहीं था , यह बहुत मुश्किल था उसके माता–पिता उसके जन्म के लिए एक जगह खोजने के लिए गए था । इस प्रकार, यीशु मसीह के जन्म स्थान का उल्लेख किया जाता है कि, ''उसने अपने पहलौठे पुत्र को जनम दिया, और उसे कपड़ों में लपेट कर चरनी में रख दिया, क्योंकि सराय में उनके लिए कोई जगह न थी।'' हम देखते पवित्र शास्त्र के अनुसार , यीशु मसीह इस दुनिया में पैदा किया जा रहा था । इस प्रकार, परमेश्वर पिता इस दुनिया में यीशु मसीह को लाने के लिए एक पात्र के रूप में मरियम को चुना । यीशु मसीह के जन्म के बाद, परमेश्वर पिता ने मरियम को, उनकी मां को कोई महत्व नहीं दिया है। इसी तरह, हम हमारे जीवन में आज देखते हैं, जो परमेश्वर के वचन को सुनने के लिए आते हैं, विभिन्न धर्मों और जातियों से हैं। 'प्रभु का वचन' का प्रसार करने के लिए प्रार्थना करने के लिए अनुरोध करती हूँ। इस

दुनिया में यीशु मसीह के जन्म के लिए कोई जगह नहीं थी । लेकिन यीशु के जन्म में नबी मीका ने भविष्यवाणी की थी,मीका ‡ % „, ''परंतु हे बेतलेहेम एप्राता, यदि तू यहूदा के कुलों से बहुत छोटा है, फिर भी मेरे लिए तुझ में से एक पुरूष निकलेगा जो इस्राएलि पर प्रभुता करेगा। उसका निकलना प्राचीनकाल से, वरन अनादिकाल से है।'' इसके अलावा, यह भविष्यवाणी की थी कि यीशु मसीह , एक सेब के पेड़ के नीचे बेतलेहेम के रास्ते पर पैदा हो जाएगा के रूप में की पुस्तक में पवित्र ग्रंथों में लिखा, श्रेष्ठगीत Š % ‡, ''यह कौन है जो अपनी प्रियतम से लिपटी हुई जंगल से चली आ रही है?'' हालांकि , कई ने कहा कि यीशु ने एक सेब के पेड़ के नीचे बेतलेहेम के रास्ते पर पैदा हो जाएगा, लेकिन मीका ‡ % „] कहता हैं कि यीशु बेतलेहेम में पैदा होंगे। नबी यशायाह , उसके जन्म से पहले बच्चे का नाम बहुत पहले भविष्यवाणी की थी की, यशायाह ‰ % ƒ†] '' इसलिए प्रभु आप ही तुम्हे एक चिन्ह देगा रू देखो, एक कुंवारी गर्भवती होगी, वह एक पुत्र को जन्म देगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी।'' लेकिन परमेश्वर पिता ने, पहले से ही अपने नबियों के कई माध्यम से यीशु मसीह के जन्म के बारे में हमें सच्चाई से बताया है । जब यीशु मसीह बेतलेहेम में पैदा हुए थे, तब रोम के लोगों का शासन था। राजा सीजर ऑगस्टस साम्राज्य मे राज्य करता था। प्रभु के लोगों को बहुत परेशान किया करता था। उस समय, जनगणना भूमि के माध्यम से डाल ले जाने के लिए एक फरमान बाहर भेज दिया। लूका „ % ƒ&ˆ , ''१ उन्ही दिनों में ऐसा हुआ कि औगूस्तुस कैसर की ओर से यह राजाज्ञा निकली कि सारे जगत के लोगों कि गणना कि जाएं। २. यह प्रथम जनगणना तब हुई जब क्विरिनियुस सीरिया का राज्यपाल था। ३.सब लोग नाम लिखवाने के लिए अपने अपने नगर को जाने लगे। ४.अतः यूसुफ भी इसलिए कि वह दाऊद के घराने और वंश का था, गलील के नासरत नगर से यहूदिया में दाऊद के नगर बैतलहम को गया। ५.कि अपनी मंगेतर मरियम के साथ जो गर्भवती थी नाम लिखवाए। ६.और ऐसा हुआ कि उनके वहां रहते हुए मरियम के प्रसव के दिन पूरे हुए।'' उस समय कानून था , लोगों को जनगणना के दौरान उनके अपने राज्यों में किया जाता था। उस समय, यूसुफ मैरी जो एक बच्चे के साथ थे, और ऊपर यहूदिया में और बेतलेहेम में नासरत नगर से बाहर , गलील से चले गए। वे भी एक घर वहाँ नहीं था, और न ही किसी को भी उन्हें एक आश्रय देना या उन्हें उस जगह में प्यार दिखा था। जैसा कि पहले ही हमने पढ़ा है, लूका „ % ‰, ''उसने अपने पहलौठे पुत्र को जनम दिया, और उसे कपड़ों में लपेट कर चरनी में रख दिया, क्योंकि सराय में उनके लिए कोई जगह न थी।''यीशु सफेद कपड़ो में लिपटे हुए और एक चरनी में रखे हुए थे क्योंकि उनके लिए कोई जगह कहीं भी नहीं थी। कल्पना

कीजिए कि कैसे दुखी होगी मरियम, यीशु मसीह की मां उस समय ! मत्ती Š % „å, ''यीशु ने उस से कहा, ''लोमडियों कि मांदें और आकाश के पक्षियों के घ ोसले होते हैं, परन्तु मनुष्य के पुत्र के लिये सिर रखने को भी कहीं स्थान नहीं है।'' इस दुनिया में सब के लिए जगह है अर्थात पशु, पक्षी और मनुष्यों के लिए भी जगह है। लेकिन हमारे यीशु मसीह इस दुनिया में अपने सिर को आराम करने के लिए कोई जगह नहीं थी। इस दुखित जन्म को भी परमेश्वर पिता द्वारा नबी यिर्मयाह को दिखाया गया था। हम पढ़ते है, यिर्मयाह ƒ† % Š , ''हे इस्राएल कि आशा तथा संकट के समय उसका उधारकर्ता ! तू क्यों इस देश में परदेशी या उस यात्री के समान हैं जिसने रात बिताने के लिए अपना तम्बू गाड़ा हो ?'' यीशु के जन्म का दर्द और दुख भी नबी यिर्मयाह के पास पिता परमेश्वर ने प्रकट कर दिया था और कोई मदद नहीं थी यीशु मसीह के जन्म के वक्त समर्थन करने के लिए लोगों से आगे आके मदद करने के लिए। यूसुफ और मरियम की पीड़ा और दर्द को प्रभु ने यिर्मयाह को दिखाया गया था। इस रहस्यमय को देखकर यिर्मयाह फूट फूट कर रो रहे थे और प्रभु से बोलने लगे ''मुसीबत के समय में आशा और इसराइल के उद्धारकर्ता।' समय था जब वहाँ हमें बचाने के लिए कोई नहीं है पर , यह यीशु 'जो घुमंतू की तरह हमें बचाने के लिए, देश से देश रात के अंधेरे में यात्रा करता था, क्यों ?

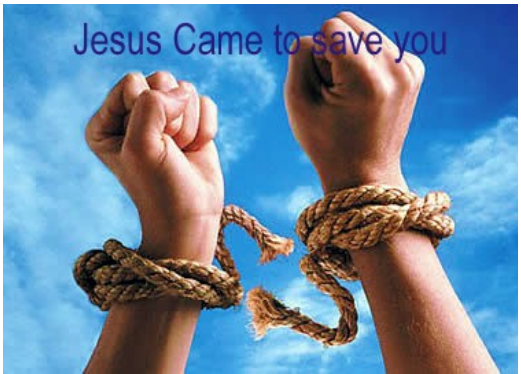

जब यीशु इस जगत का उजाला , इस दुनिया का राजा है। फिर भी , क्यों वह इस दर्द को और इस दुनिया में दुख भुगतना पड़ा।'' हमारे आशा और विश्वास आज कौन है? यह यीशु मसीह है। यशायाह ‡... % ..., ''वह तुच्छ जाना गया और मनुष्यों का त्यागा हुआ था। वह दुरूखी पुरूष था और पीड़ा से उसकी जान पहिचान थी। वह ऐसे मनुष्य के समान तुच्छ जाना गया जिस से लोग मुख फेर लेते है, और हमने उसका मूल्य न जाना।'' यीशु मसीह परमेश्वर की ओर से हमारे लिए एक उपहार है। यहां तक कि उनके जन्म से पहले शत्रु को यह पता था और इस तरह कितने मुसीबत पैदा किए की हर मुमकिन परेशानी मे डाल दिया इस दुनिया में आने के लिए । उन्होंने कहा कि यहां तक कि एक उचित जगह इस दुनिया में पैदा होने के लिए नहीं थी । एक ही परमेश्वर है, जो हम में से हर एक को इस दुनिया में एक उचित जगह दिया गया है, लेकिन वह खुद को एक जगह पैदा होने के लिए नहीं था। जन्म के बाद, जब यीशु बड़े हुए और उनके प्रचार करने का काम शुरू हुआ, हम देखते हैं कि कैसे लोगों ने उनको अपमानित करना शुरू कर दिया। मत्ती ƒƒ % ƒ‹, मनुष्य का पुत्र खाता–पीता आया और वे कहते हैं, ''देखो एक पेटू और पियक्कड़, चुंगी लेने वालों और पापियों का मित्र' फिर भी बुद्धि अपने कार्यों से प्रमाणित होती है।'' लोगों के झूठे दावों के बावजूद, अकेले अपने ज्ञान के द्व ारा, वह हमारी पीढ़ी के पापों को क्षमा कर दिया

और हम में से हर एक को बेहद प्यार किया है। भीड़ भी उनके वचन सुनने के लिए तैयार नहीं थे। लेकिन उनकी महान ज्ञान के साथ , वह सभी विपक्षी का सामना करना पड़ा उसके बावजूद सभी मानव जाति को प्यार करता था। आज, २००० साल से अधिक वर्षों हो गए है और हम जानते हैं कि हमारे प्रभु अच्छे है । हम जानते हैं कि हमारे परमेश्वर ने हमारे लिए उनका जीवन दिया है और हमारे पापों से हमें छुटकारा दिया है। हालांकि भीड़ ने यीशु के ऊपर झूठा आरोप लगाया , फिर भी परमेश्वर के प्रेम और धार्मिकता सभी पीढ़ियों के लिए जाना जाएगा। कल्पना कीजिए, अगर हमारे परमेश्वर , हमारे लिए उनका जीवन नहीं दिया होता। अगर हम अपने पापों से उद्धार न पाते, तो हमारी जगह कहाँ होती ? हम नरक की आग में नष्ट कर दिए जातें। हममें से कोई भी अच्छा नहीं हैं , हम एक समय पर एक बार सब पापी थे हम ने पाप किया है और अलग अलग तरीकों से प्रभु के खिलाफ चले गए हैं। लेकिन यह महान प्यार के साथ , वह हमें उठाया और हमें गले लगा लिया है । हमें जीवन में एक पता देने के लिए, वह इस दुनिया में उनके जन्म से पहले भी मुसीबत का सामना करना पड़ा। हाँ, प्रभु अलग अलग तरीकों से हम में से हर एक को प्यार किया है। हमें उसके सामने खुद को विनम्र करना हैं। हम राजा हिजकिय्याह , जो एक बीमारी से पीड़ित था उसके बारे में पवित्र ग्रंथ से कहानी में पता है। वहाँ उसे अपनी बीमारी से बचाने के लिए कोई नहीं था। नबी यशायाह ने दौरा किया और उससे कहा कि उसके अंत के लिए तैयार हो । वहाँ एक नबी से कोई बड़ा डॉक्टर नहीं होता , इस प्रकार जब वह अपने अंत के बारे में सुना , वह दुखी हो गया। वह दीवार की ओर मुड़े और फूट फूट कर रोना शुरू किया और माफी के लिए प्रभु से प्रार्थना की। प्रभु हिजकिय्याह पर दया किया और यशायाह को बताया जाके कहने के लिए और उसे बताना है कि उसके जीवन में १५ साल की वृद्धि हुई है। इस तरह हमारे लिए प्रभु का प्यार है। लेकिन हम देखते हैं कि जब राजा हिजकिय्याह अच्छी तरह से स्वस्त हुआ और अपने अच्छे समय में, वह सब भूल गया कि प्रभु ने उसके लिए क्या किया है। जब बेबीलोन के राजा ने दौरा किया, हिजकिय्याह ने उसे सभी सामग्री बातें और अपार आशीर्वाद वह प्रभु से प्राप्त किया दिखाया। इस प्रकार, प्रभु का गुस्सा राजा हिजकिय्याह पर आया और कहा कि उनके अंत की शुरुआत थी।

यशायाह …‹ % ƒ&Š] १.उस समय बेबीलोन के राजा बलदान के पुत्र मरोदक–बलदान ने यह सुनकर की हिजकिय्याह की रोगी था और चंगा हो गया है उसके पास भेंट और पत्र भेजे। २.हिजकिय्याह अत्यन्त प्रसन्न हुआ और उनको अपने समस्त भण्डार का चांदी–सोना, सुगन्धित द्रव्य , बहुमूल्य तेल, तथा अपने सब सशत्रागार और जो कुछ उसके भण्डारों में था, दिखाया। हिजकिय्याह के भवन और राज्य भर में ऐसी कोई वस्तु न रह गई जो उसने उन्हें न

दिखाई हो। ३. तब यशायाह नबी ने राजा हिजकिय्याह के पास जाकर पूछा, ''इन मनुषयों ने क्या कहा और वे तेरे पास कहाँ से आए थे?'' हिजकिय्याह ने कहा, ''वे तो दूर देश अर्थात बेबीलोन से मेरे पास आए थे।'' ४.तब उसने पूछा, ''उन्होंने तेरे भवन में क्या क्या देखा है?'' हिजकिय्याह ने उत्तर दिया, ''जो कुछ मेरे भवन में है उन्होंने वह सब देखा। मेरे भण्डारों में कोई ऐसी वस्तु नहीं जो मैंने उन्हें न दिखाई हो।'' ५.तब यशायाह ने हिजकिय्याह से कहा, ''सेनाओं के यहोवा का वचन सुनरू ६.देख, ऐसे दिन आने वाले हैं जो कुछ तेरे भवन में है तथा जो कुछ तेरे पुरखाओं ने आज तक भंडार में जमा करके रखा हैं, वह सब का सब बेबीलोन को ले जाएगा और कुछ भी छोड़ा न जाएगा,''यह यहोवा की वाणी है। ७.''और तेरे पुत्रों में से जो तुज से उत्पन्न होंगे और जिनका पिता तू ही होगा, अनेक बंधी बनाकर ले जाएंगे, और वे बेबीलोन के राजा के महल में खोजे बनेंगे। ८.तब हिजकिय्याह ने यशायाह से कहा, ''यहोवा का जो वचन तू ने कहा वह भला ही है।''क्योंकि उसने सोचा, ''मेरे दिनों में तो शान्ति और सच्चाई बनी रहेगी।'' हम ध्यान से यह याद रखना चाहिए कि हम प्रभु का आशीर्वाद हम पर बौछार का उपयोग करें और यह उस में गर्व करने के आवश्यकता है और अच्छा इस्तेमाल किया होना चाहिए उनके इस वचन का प्रसार करने के लिए उपयोग करना चाहिए और नाकि गर्व से इसे दूसरों को दिखाने की जरूरत है । प्रभु जो लोग स्वयं के बारे में दावा करते है उन्हें पसंद नहीं करते है। राजा हिजकिय्याह ने बेबीलोन के राजा को अपने दुख के बारे में गवाही नहीं दी और ना ही कैसे प्रभु ने अपने नबी यशायाह भेजा और उसे मौत से बचाया और उसे जीवन के १५ साल अतिरिक्त उपहार में दिया है यह कुछ नहीं बताया । इसके बजाय की वह प्रभु को महिमा दे, राजा हिजकिय्याह ने सामग्री धन वह प्राप्त है उसे दिखाया। इस प्रकार, वह सब कुछ खो दिया है और यह भी अपने बच्चों को कसदियों द्वारा बंदी बना लिया गया था। हम राजा हिजकिय्याह के जीवन का दुख भरा अंत देखते हैं। हमारा परमेश्वर हमें एक धन्य और सुखी जीवन देने के लिए चाहता है, हालांकि वह हमारे लिये इस दुनिया में आने के लिए कितने पीड़ित हुए थे। प्रभु हमारा परमेश्वर है जो हमारा खुद पर सारा दोष , शर्म की बात और पाप ले लिया है। इस प्रकार, जो कुछ भी हम कर रहे हैं और हम क्या है और हमारे साथ क्या है हम पर उनकी ही कृपा और आशीर्वाद है। हम केवल हमारे जीवन के हर पल को धन्यवाद और उसे प्रशंसा करने की जरूरत है। जैसे की राजा हिजकिय्याह ने किया था, हम कभी भी कुछ भी है कि हमारे पास में कभी गर्व नहीं करना चाहिए। प्रभु कभी घमंडियों को पसंद नहीं करता । हमें याद रखना

चाहिए , प्रभु के बिना हम कुछ भी नहीं कर सकते और हम से कुछ भी नहीं होगा। यह उनके अपने प्यार की वजह से है, कि हम धन्य हैं। मत्ती ^ % ....., ''परंतु तुम पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज में लगे रहो तो ये सब वस्तुएं तुम्हें दे दी जाएंगी।'' याद रखें, हम पहले परमेश्वर के राज्य और हमारे जीवन में धार्मिकता की खोज करना चाहिए, वह हमारे लिए सब कुछ जोड़ देगा। लेकिन कल्पना करें , अगर हम सब कुछ है और प्रभु ही हमारे जीवन में नहीं है, हमारे जीवन एक बड़ा बेकार है और राजा हिजकिय्याह की तरह हमारे जीवन कसदियों के हाथों में दिया जाएगा। आज बेबीलोन कौन है? यह शत्रु, अंधकार, बुराई है। कल्पना कीजिए हमारे जीवन दुश्मन के हाथों में दिया जाएगा , तो हम नष्ट हो जायेंगे। मरकुस f % f†&f‡, ''यूहन्ना के बन्दी बना लिए जाने के बाद यीशु तो परमेश्वर का सुसमाचार सुनाता हुआ गलील को आया, और यह कहने लगा, ''समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट है, मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो।'' प्रभु कहते हैं कि उनका राज्य हाथ के निकट में है, पश्चाताप करें, अपने अपने मन बदले और परमेश्वर के वचन पर अपना विश्वास रखें। यह सब पवित्र शास्त्र मे विस्तार से बताया गया है उदाहरण के तौर पे मत्ती में , मरकुस, लूका और यूहन्ना में एक ही है कि प्रभु के राज्य हाथ में है ..... यह अब हमें ईश्वर और परमेश्वर के वचन पर विश्वास रखने के लिए समय है । हम प्रभु के वचन हर शनिवार और रविवार को सुनते है, हमारे कान बंद नहीं किया जाना चाहिए लेकिन उनके वचन के लिए इच्छुक होना चाहिए। हमारे प्रभु हमारे लिए बेहद मुश्किलों का सामना करना पड़ा है। यीशु कई स्थानों पर अपने पैरों से यात्रा करते थे लोगों को सुसमाचार प्रचार और सिखाने के लिए। इस प्रकार, हमारे दिल हमेशा अकेले परमेश्वर की महिमा देने के लिए तैयार होना चाहिए। जब भी घमंड हमारे दिल में आता है, प्रभु बेबीलोन के हाथ में हमारे जीवन को दे देंगे। इस प्रकार, समय हाथ से निकल जाए हमें परमेश्वर के वचन पर ध्यान देना बहुत महत्वपूर्ण है। यशायाह ^f % „, ''कि यहोवा के करुणा करने के समय और हमारे परमेश्वर के पलटा लेने के दिन का प्रचार करूं, कि सब शोकितों को शान्ति दूं।'' यह केवल वचन है कि हम जो मलहम जैसे लगा रहे हैं जो पीड़ित हैं । परमेश्वर का वचन सुनकर भी, फिर भी हम नहीं बदलते है , तो जीवन में अपनी जगह अलग होगी। इस प्रकार, यीशु मसीह पहले से ही अपने दूसरे आगमन के बारे मे बताया है 'के बाद यह केवल वचन हर नुक्कड़ और इस दुनिया के कोने–कोने में फैलता है, कि वह फिर से आ जाएगा' भविष्यवाणी की गई है। हम में से कोई कहना नहीं चाहिए है कि हमें पता नहीं था कि यह एक ही रास्ता है, या हमने नहीं सुना है 'वचन'। जब यीशु ने अपनी सभा शुरू किया, हम देखते हैं, यूहन्ना f % ff, ''वह अपनों के पास आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया।'' हम देखते हैं कि यीशु मसीह के लिए कोई जगह नहीं था इस

दुनिया में पैदा होने के लिए, वह एक पथिक के रूप मे जन्म हुआ था, और जिनके लिए इस दुनिया में आया ? क्यूं कर? वह अपने लोगों के लिए आया था, लेकिन उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया । हम सभी जानते हैं कि यीशु हमारे लिए आया था और तुम्हारे और मेरे लिए अपना जीवन दे दिया । हम इस प्रकार सभी स्थानों में इस 'वचन' का प्रसार करने की जरूरत है और अगर हम प्यार से प्रभु की सेवा करने के लिए और उनके वचन का प्रसार करने की जरूरत नहीं समझते है , हमारे जीवन की कीमत क्या है? प्रभु में लौदीकिया की कलीसिया के बारे में प्रकट करता है, प्रकाशितवाक्य … % „å, ''देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं। यदि कोई मेरी आवाज सुनकर द्वार खोले तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा, और वह मेरे साथ।'' इस समूह ने उनके चर्च के बाहर यीशु मसीह को खड़ा रखा, वे भीतर उसे आमंत्रित नहीं किया था , क्योंकि वे जानते थे कि वे अपने सुधार सलाह नहीं ले सकते है । इस प्रकार वे प्रभु को चर्च के बाहर खड़ा कर दिया। इस प्रकार प्रभु लौदीकिया की मंडली से कह रहा है, ''देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं। यदि कोई मेरी आवाज सुनकर द्वार खोले तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा, और वह मेरे साथ।'' प्रभु हमारे जीवन में जबरदस्ती प्रवेश नहीं करेगा जैसे चोर जबरन तरह से करता है। यहां तक कि, आज अगर हम अपने दिल को खोलके उसे आमंत्रित करते है, वह आकर हमारे साथ भोजन करेगा। श्रेष्ठगीत ‡ % „ मैं तो नींद में थी, परंतु मेरा मन जाग रहा था। सुनो ! मेरा प्रियतम खटखटा रहा थारू '' मेरी बहन, मेरी प्रियतमा, मेरी कबूतरी, मेरी निर्मल प्रेमिका ! मेरे लिए खोल, क्योंकि मेरा सर ओस से गिला हो गया है, और रात्री की गीली बूंदों से मेरे केस तर हो गए है।'' प्रभु आज भी हमारे दरवाजे पर दस्तक दे रहा है , अगर हम उनकी दस्तक को सुनाते है और दरवाजा खोलते है, वह आकर हमारे साथ रहने के लिए तैयार है। उन्होंने कहा कि वह हमें अपने निवास जगह बनाएगा। यूहन्ना ƒ % ƒ† ''और वचन, जो अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण था देहधारी हुआ, और हमारे बीच में निवास किया, और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।'' अगर हमारे दिल को आज प्रभु के लिए खोल रहे हैं, तो वह आकर हमारे भीतर आकर रहेगा । हम जानते हैं कि कैसे राजा हेरोदेस ने यीशु मसीह के जन्म के बारे में सुना और उसके लिए खोज शुरू कर दिया। क्यों वह उसके लिए खोज रहा था ? उसे प्यार दिखाने और उस पर दया करने के लिए। नहीं, वह यीशु मसीह को मारने और जन्म के समय उसे नष्ट करने के लिए खोज रहा था। हाँ, शत्रु जानता था कि यीशु हमारे जैसे पापियों के लिए इस दुनिया में भेजा गया था , वह अनाथ बच्चों के लिए एक पिता होगा। हमारे लिए प्रभु के प्यार की कल्पना करो। आज भी हम अपने बीच में हेरोदेस जैसे लोग मौजूद है। जब यीशु नासरत में

उपदेश दे रहा था , लोगों ने उनके साथ क्या किया।

लूका † % „‹ , ''और उन्होंने उठकर उसे नगर से बाहर निकाल दिया और जिस पहाड़ी पर उनका नगर बसा था, उसकी चोटी पर ले गए कि वहां से उसे नीचे फेंक दें।'' वे जबरन एक चट्टान पे यीशु को ले गए और उसे चट्टान के नीचे फेंक देना चाहा। यह लोग तो हेरोदेस से भी बदतर थे । आज भी ऐसे लोग हैं जो प्रभु के काम के खिलाफ काम कर रहे हैं। लेकिन याद रखना, जितना अधिक शत्रु प्रभु के काम को दबाएगा, प्रभु इस दुनिया में उनके कामों को और बढ़ता जायेगा। जो भी योजना शत्रु बना रहा था यीशु के जन्म के समय से ही, लेकिन फिर भी यीशु इस दुनिया में पैदा हुए। यहां तक कि जब हेरोदेस जन्म के समय यीशु को मारना चाहता था , फिर भी वह बच गया और इस दुनिया में पला बढ़ा। जब वह अपनी सभा शुरू करने पर था तब भी नासरत के लोगों ने उसे मारने का फैसला किया लेकिन यह भी योजना बुरी तरह विफल हो गई। पिता परमेश्वर के हर काम है कि यीशु को पूरा करने की योजना बनाई, वहाँ बाधा थी, लेकिन यीशु ने अपने पिता के हर काम को परिपूर्ण किया है और उसी को संपूर्ण किया। उन्होंने कलवारी के क्रूस पर हमारे लिए जान दी और ३ दिन वे मृतकों में से भी जी उठे। अगर हम प्रभु के लिए हमारे प्यार में वास्तविक हैं और हम लगन से उसे तलाश करें और धर्म से उसका अनुसरण करें तो भले ही हेरोदेस के जैसे हजारों हमारे खिलाफ आते हैं, तो भी इस दुनिया में प्रभु का काम जारी रहेगा और उनकी कृपा के माध्यम से अकेले ही पूरा किया जाएगा। प्रभु का काम इस दुनिया में कभी बंद नहीं होगा। लूका Š % ... ‰ , ''तब गिरासेनियों और आस पास के सब क्षेत्र के सब लोगों ने यीशु उस से विनती की, कि वह उनके पास से चला जाए, क्योंकि वे अत्यंत भयभीत हो गए थे, और वह नाव पर चढ़कर लौट गया।'' एक आदमी को बचाने के लिए , कितने सुअर की मौत हो गई ? हजारों की । इस प्रकार, प्रभु इस दुनिया में अपनी सभा के दौरान हजारों लोगों और लाखों लोगों का बचाया। लेकिन भीड़ ने यीशु मसीह से भी अधिक सूअरों से प्यार किया। अपने स्वयं के लाभ और उनके हक से महरूम आय में नुकसान के लिए, वे गाड्रेन्स के देश छोड़ने के लिए और वहां से विदा करने के लिए यीशु को चेतावनी दी । यीशु ने उस जगह को तुरंत छोड़ दिया। हम यह भी पता है यीशु के कष्टों को कलवारी के क्रूस पर जो उन्होंने सहा । कैसे वह अपमानित किया गया था और उस पर थूका गया, लेकिन फिर भी वह क्रूस पर अपने पिता की इच्छा को पूरा किया। वह

सब कुछ सहा, खुशी से । क्यों ? हमें अनन्त जीवन देने के लिए। आने वाली पीढ़ी अकेले उनकी कृपा से धन्य हो जाएगी। मत्ती „‰ % „^&‡… २६. तब उसने बरअब्बा को तो उनके लिए छोड़ा, पर यीशु को कोड़े लगवाकर क्रूस पर चढ़ाये जाने के लिए सोप दिया। २७. तब राज्यपाल के सैनिक, यीशु को पेट्रोरियुम में ले गए, और वहां उसके चरों ओर रोमी सैन्य–दल को एकत्रित कर लिया। २८. फिर उसके वस्त्र उतारकर उन्होंने उसे गाड़े लाल रंग का चौगा पहिनाया। २९. और काटों का मुकुट गूंथकर उन्होंने उसके सिर पर रखा और उसके दाहिने हाथ में सरकण्डा दिया। फिर उसके आगे घुटने टेककर वे उसका उपहास करके कहने लगे, '' हे यहूदियों के राजा तेरी जय हो! '' ३०.उन्होंने उस पर थूका, और सरकण्डा लेकर वे उसके सिर पर मारने लगे। ३१. उपहास करने के बाद उन्होंने उसका चौगा उतारा ओर उसी के वस्त्र पहिनादिए, और क्रूस पर चढ़ाने के लिए ले चले। ३२. जब वे बाहर निकल रहे थे तो उन्होंने शिमौन नमक एक मनुष्य मिला। उन्होंने उसे बेगार में पकड़ा कि उसका क्रूस उठाकर ले चले। ३३. और जब वे उस स्थान पर आए जो गुलगुता कहलाता है, अर्थात 'खोपड़ी का स्थान,' ३ ४. तो उन्होंने उसे पित्त मिला हुआ दाखरस उसे पीने को दिया, परन्तु उसने चख कर पीना न चाहा। ३५.ओर जब वे उसे क्रूस पर चढ़ा चुके तो उन्होंने चिट्ठियां डाल कर उसके कपड़ों को आपस में बांट लिया। ३६. और वहां बैठकर वे उसका पहरा देने लगे। ३७. और उन्होंने उसके सिर के ऊपर उसका दोषपत्र लगाया जिसमे लिखा था,''यह यहूदियों का राजा यीशु है।'' ३८.उस समय उन्होंने उसके साथ दो डाकुओंको भी क्रूस पर चढ़ाया, एक हो उसकी दाहिने, और दूसरे को उसकी बाएं ओर। ३९. वहां से आने–जाने वाले उसकी निन्दा कर रहे थे ओर सिर हिला हिला कर, ४०. कह रहे थे, ''हे मन्दिर को ढाने वाले और तीन दिन में बनाने वाले, अपने आप को बचा ! यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस पर से उतर आ।'' ४१. इसी प्रकार मुख्या याजक भी शास्त्रियों और प्राचीनों के साथ उसका ठट्ठा करते हुए कह रहे थे, ४२.''इस ने दूसरों को बचाया, पर अपने को नहीं बचा सकता। यह इस्राएल का राजा है –अब क्रूस पर से उतरे तब हम इस विश्वास करेंगे। ४३. यह परमेश्वर पर भरोसा रखता है, यदि वह इस से प्रसन्न है तो अभी छुड़ा ले, क्योंकि इसने कहा था, 'मैं परमेश्वर का पुत्र हूं'।'' ४४. जो डाकू उसके साथ क्रुसो पर चढ़ाए गए थे, वे भी इसी प्रकार उसकी निन्दा कर रहे थे। ४५. दोपहर से लेकर तीन बजे तक सारे देश में अंधकार छाया रहा। ४६. तीन बजे के लग भाग यीशु ऊँची आवाज से चिल्लाया ''एली, एली, लमा शबक्तनी ?'' अर्थात, ''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया ?'' ४७. वहां खड़े हुओं में से कुछ ने यह सुनकर कहा, ''यह मनुष्य एलिय्याह को पुकार रहा है।'' ४८. उन में से एक ने तुरन्त दौड़कर , स्पंज को सिरके में डुबाया, और सरकण्डे पर रख कर उसे चुस ने को दिया। ४९. परंतु शेष लोगों ने कहा, ''देखें एलिय्याह उसे बचाने के लिए आता है या नहीं।''

५०. तब यीशु ने फिर ऊँची आवाज से चिल्लाकर प्राण त्याग दिया। ५१. और देखो, मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फट कर दो टुकड़े हो गया। पृथ्वी डोल उठी, और चटानें भी तड़क गईं, ५२. तथा कब्रें खुल गईं, और सोए हुए बहुत–से पवित्र लोगों के शव जीवित हो उठे। ५३. और उसके पुनरुस्थान के बाद वे कब्रों में से निकलकर पवित्र नगर में गए और बहुतों को दिखाई दिए। यह सब प्रभु हमें आज पूछ रहा है , आपकी दिल और अपने घरों में एक जगह है क्या? हमें प्रभु को हमारे दिल और हमारे घरों में पहला स्थान देना चाहिए। यह बहुत महत्वपूर्ण है। एक देवता है जो हम में से हर एक को इस दुनिया में एक घर और पता देना चाहता है, यहां तक कि उन्हें पैदा होने के लिए एक जगह नहीं था । सभी कष्टों और अपमान उनके जन्म के दौरान ,उनके जन्म से पहले यीशु मसीह को सामना करना पड़ा , उनके जन्म के बाद और दिन आगे बढे , अपनी सभा और शिक्षाओं के दौरान भी क्रूस पर अपना मरण के बावजूद। उन्होंने सब कुछ केवल हमारे लिए सहा कारण है कि हम सभी अंधेरे में नहीं रहें, लेकिन प्रकाश में आये , सब बंधन से बचाए और शत्रु के खिलाफ हर योजना को हराने के लिए हम में से हर एक को बचाए। यह हमारे लिए प्रभु के भौंचक्का प्रेम है, अपनी आखिरी सांस तक । आज भी वह हमारे बीच में है , अभी भी हमारे दरवाजे पर दस्तक दे रहा है , जो उनकी आवाज सुनेंगे और दरवाजा खोलेंगे, वह भीतर आकार तुम्हारे और मेरे साथ भोजन करने के लिए तैयार है। हमारे प्रभु की पीड़ा, दर्द और दुख हमेशा हमारे दिलों में होना चाहिए। जीवन में हमारे सभी उपलब्धियों, हमारे लिए प्रभु की कृपा की तुलना में कुछ भी नहीं है। हम केवल अपने प्यार से और उसके नाम से जीवन में सब कुछ हासिल किया है। इस प्रकार, सब जो हमारे पास है और हम सभी जो कर रहें है उन सब में , हम अकेले प्रभु की जय देने की जरूरत है। हमारा घमंड हमारे धन , हमारी शिक्षा , हमारे काम पर कभी नहीं होना चाहिए , यह सब दान परमेश्वर से प्राप्त हुआ है । तो हमें प्रभु परमेश्वर को हमारे जीवन में प्रथम स्थान और भी धन्यवाद की प्रशंसा देना चाहिए।

प्रभु उनके वचन के माध्यम से हम में से हर एक को आशीर्वाद दें।

पास्टर सरोजा म.